प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2021/02

बकरीपालन आय का अच्छा स्त्रोत

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

बकरीपालन आय का अच्छा स्त्रोत

बकरी पालन प्राचीन काल से सीमांत एवं भूमिहीन किसानों की आय का प्रमुख स्त्रोत रहा है। हमारे देश में ग्रामीण ही नहीं अपितु कस्बों व शहरी क्षेत्रों में भी घर के पिछवाड़े में बकरी पालन किया जाता है। हालही के दिनों में डेंगू व चिकनगुनिया जैसे घातक रोगों में बकरी के दूध के लाभ के प्रकाश में आने के उपरांत इसका पालन अधिक तेजी से प्रचलित हुआ है। बकरी के दुध के असंख्य फायदे, मांस के लिए इसके उपयोग, चरम जलवायु में भी जीवित रहने, उच्च रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं दूसरे पशुओं की तुलना में कम प्रबंधन लागत, साल में दो बार बच्चे देने की क्षमता, अधिकांश नस्लों में जुड़वॉ या तीन बच्चे देने की विशेषताएं, इत्यादि गुण बकरीपालन को अधिक फायदेमंद बनाते हैं। आंकड़ों के अनुसार बकरियों की संख्या के मामले में भारत विश्व में दूसरे स्थान पर आता है। परन्तु बकरी पालन को उद्योग की भांति विकसित करने तथा अधिकाधिक लाभ कमाने के लिए हमें वैज्ञानिक पद्धिति से इनका पालन एवं प्रबंधन करना चाहिए। वैज्ञानिक पद्धिति से मतलब उपयुक्त चारा प्रबंधन, उपयुक्त आवास, उचित समय पर परजीवि एवं कृमिनाशक दवाओं का उपयोग, समय पर टीकाकरण तथा जन्मोपरांत बच्चे की उचित देखभाल व पोषण प्रबंधों से है।

1.भारत में प्रचलित बकरियों की नस्लें:

मांस हेतु

1. बीटल 2. ब्लैक बंगाल 3. मालाबारी 4. गंजाम 5. टेरेसा 6. गड्डी 7. चेंगु 8. चांगथांगी

दुध एवं मांस हेतु

1. जमुनापरी 2. बारबरी 3. जखराना 4. सुरती 5. सिरोही 6. ओस्मानाबादी 7. झालावाडी 8. गोहिलावाडी

2. बकरी पालन हेतु आवास प्रबंधन

2.1 आवास हेतु कुछ उपयोगी तथ्य

1. बकरियों से अधिकतम उत्पादन क्षमता प्राप्त करने के लिए पशु आवास का प्रावधान कम लागत सामाग्री के साथ किया जाना चाहिए। 2. बकरी आवास हेतु उँचे स्थान का चुवाव करना चाहिए। 3. बकरी आवास के आसपास पौधे उगाया जा सकता है, बढ़ रहे बकरियों के लिए चारे के लिए उपयोग होगा। 4. साफ पानी का प्रबंधन होना चाहिए। 5. बकरियो का आवास हवादार होना चाहिए। 6. आवास की दीवारे छेद मुक्त होना चाहिए। 7. आवास की मंजिल ऐस्बेसटस की बनी होनी चाहिए। 8. आवास की उँचाई 6 फीट होनी चाहिए। 8. सस्ती लागत हेतु फूस की होनी उचित होती है।

2.2 बकरी के आवास का मापदंड (स्त्रोत – http://agritech.tnau.ac.in)

क्र० सँ०	आयु	ढका छेत्र (वर्ग मीटर)	खुला छेत्र (वर्ग मीटर)
01	03 महीने तक	0.2 – 0.25	0.4 – 0.5
02	03 से 06 महीने तक	0.5 – 0.75	1.0 – 1.5
03	06 से 12 महीने तक	0.75 – 1.0	1.5 – 2.0
04	वयस्क बकरी	1.5	3.0
05	बकरा /ग्याभिन बकरी/दूध देने वाली बकरी	1.5 – 2.0	3.0 – 4.0

3. बकरियों का पोषण प्रबंधन

बकरी पालन में पोषण का बहुत अधिक महत्व है। बकरियों को उनकी उपयोगिता व शारीरिक आवश्यकताओं के अनुसार ही भोजन उपलब्ध करना चाहिए। बकरी पालन हेतु उपयुक्त चारे को तीन भागों में बांटा गया है। जैसे– हरा चारा, भूसा एवं दाना।

हरा चारे का पुनः तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है, जैसे फली(दलहनीय) चारा जैसे की बरसीम, लोबिया, लूसर्न आदि, अनाज (अदलहनीय) चारा अर्थात ज्वार, बजरा, मक्का एवं पेड़ों की पतियॉ जैसे नीम, पीपल, बरगद, सुबबूल एवं सहजन।

3.1 वयस्क बकरी का पोषण प्रबंधन

ऐसी बकरियां जो वयस्क है और क्षेत्र में हरे चारे की पर्याप्त उपलब्धता है तो दाने की कोई विशेष जरूरत नहीं होती परन्तु अन्य स्थितियों में 150 से 350 ग्राम दाना प्रति बकरी प्रति दिन के हिसाब से उपयुक्त रहता है।

3.2 गर्भावस्था के दौरान पोषण प्रबंधन

गर्भावस्था के शुरूआती चार महीनों में 5 किलाग्राम हरा चारा(2 किलोग्राम फली चारा+ 2 किलाग्राम अनाज चारा+ 1 किलो हरी पतियॉ)साथ में 200–250 ग्राम दाना प्रति बकरी प्रति दिन सर्वोतम होता है। हलॉकि इस बात का ध्यान रखना चाहिए की गर्भाकाल के आखिरी महीने में बच्चे का विकास बहुत तीव्र गति से होता है अतः थोड़ा–थोड़ा चारा दिन में कई बार देना चाहिए साथ ही साथ पानी की उपलब्धता पूरे समय सुनिश्चित करनी चाहिए। इस दौरान में

बकरी का 1–2 किलाग्राम हरा चारा हर दो से तीन घंटे के अंतराल में देना चाहिए। इसके अतिरिक्त सुवह एवं शाम को भूसे की सानी, 300 ग्राम दाने चाहिए।

3.3 दुधारू बकरी का पोषण प्रबंधन

1. 6–8 घंटे चराना +1 किलो दाना, आधा से 1 किलो भूसे की सानी के साथ+दुग्ध उत्पादन की आधी मात्रा मे दाना देना चाहिए।

2. चरागाह की उपलब्धता न होने पर 200 ग्राम साइलेज+1 किलो ग्राम दाना से 1 किलो भूसे की सानी के साथ + 1 किलो ग्राम पेड़ों की पतियॉ+ दुग्ध उत्पादन की आधी मात्रा में दाना प्रति बकरी प्रति दिन।

विशेष – चारे का उपर्युक्त में से कोई भी तरीका अपनाये परन्तु प्रति बकरी दो चाय के चम्मच बराबर खनिज लवण मिश्रण चारे के साथ जरूर करें। खनिज लवण न सिर्फ निर्वाध दुग्ध उत्पादन के लिए आवश्यक है अपितु पशु की प्रजनन प्रक्रिया के निर्वाध रू॰ से संचालन के लिए भी नितांत आवश्यक है।

3.4 बकरो के पोषण प्रबंधन

6–7 घंटे चराना + 1250 ग्राम दाना 1 किलो ग्राम भूसे की सानी के साथ + 1 चाय चम्मच के बराबर खनिज लवण मिश्रण।

3.5 बच्चे के जन्म से 90 दिनों का चारा प्रबंधन

आयु (दिनों में)	बकरी का दूध	क्रीप चारा	हरा चारा
१	कोलोस्ट्रम ५०- ५० मिली लीटर दिन में ६ बार	----------	----------
२ से ७	५०- ५० मिली लीटर दूध दिन में ६ बार	----------	----------
७ से १४	१००- १०० मिली लीटर दूध दिन में ४ बार	----------	----------
१५ से ३०	१००- १०० मिली लीटर दूध दिन में ४ बार	अल्प मात्रा में (५० ग्राम)	अल्प मात्रा में
३१ से ६०	----------	१०० से २०० ग्राम	२ से ४ घंटे चराना
६१ से ९०	----------	२०० से ४०० ग्राम	४ घंटे से ज्यादा चराना

4. बकरियों का स्वास्थ्य प्रबंधन

बकरियों के स्वास्थ्य प्रबंधन के मुख्य घटक हैं टीकाकरण एवं परजीवी उन्मूलन। सामान्यतः बकरियों में रोग प्रतिरोधक क्षमता अन्य पशुओं की तुला में अधिक होती है लेकिन कुछ रोगों के प्रति टीकाकरण बहुत जरूरी होता है जिसकी अनुसूची निम्न प्रकार से है।

4.1 बकरियों में टीकाकरण कार्यक्रम

महीना	रोग के लिए टीका	वयस्क बकरी	६ से १२ माह का बकरी का बच्चा	विशेष टिप्पणी
मार्च	गला घोटू	५ मि॰ ली॰ खाल के नीचे	२.५ मि॰ ली॰ खाल के नीचे	हर साल दहराएं
मई	एन्टेरोटोक्सिमिआ	५ मि॰ ली॰ खाल के नीचे	२.५ मि॰ ली॰ खाल के नीचे	
मई	खुरपका मुँहपका	५ मि॰ ली॰ खाल के नीचे	५ मि॰ ली॰ खाल के नीचे	
जुलाई	ब्लैक क्वार्टर	५ मि॰ ली॰ खाल के नीचे	२.५ मि॰ ली॰ खाल के नीचे	
अगस्त	खुरपका मुँहपका	५ मि॰ ली॰ खाल के नीचे	०.५ मि॰ ली॰ खाल के नीचे	हर छह माह में दुहराएं
सितम्बर	एन्टेरोटोक्सिमिआ	५ मि॰ ली॰ खाल के नीचे	२.५ मि॰ ली॰ खाल के नीचे	

स्त्रोत–Livestock Vaccination and Health Record Book. Pp-16 Debojyoti Borkotoky and Raj. K. Singh, कृषि विज्ञान केन्द्र, फेक. नागालैंड

4.2 बकरियों मे बाह्य एवं अन्तः परजीवी नाशक औषधियों का प्रयोग

बकरियों में बाह्य एवं अन्तः परजीवी नाशक औषधियों का प्रयोग नितांत आवश्यक है। ऐसा न करने पर धीरे–धीरे शरीर में परिजीवियों की संख्या बढ़ जाती है। ये परजीवी शरीर के बाहर या अंदर चिपक कर खून चूसते है जिससे पशु को प्रारंभ मे खून की कमी होती है। एवं पशु तनाव ग्रस्त हो जाता है तथा बाद में उसके उत्पादन क्षमता और प्रजनन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। औषधियों का प्रयोग इस प्रकार है।

4.2.1 अन्तः परजीवी नाशक औषधियों की प्रयोग

1. पहली कृमि नाशक औषधियों 1 या 2 माह के बच्चे को पिलानी चाहिए उसके उपरांत हर तीन महीने में दवा देना चाहिए जब तक की बच्चा एक वर्ष की आयु का ना हो जाए।
2. वयस्क बकरियों का 6 माह के अंतराल पर (मुख्यतः मार्च एवं अक्टूबर) खिलानी या पिलानी चाहिए।

विशेष - औषधि पिलाते समय इस बात का विशेष ध्यान देवे की दवा श्वास नाली में ना जाए। इसके लिए दवा धीरे धीरे व थोड़ी थोड़ी मात्रा में मुँह के किनारे से पिलाएँ या पशु चिकित्सक/ पशु औषधिक/पशुधन सहायक की सहायता लें।

4.2.2 बाह्य परजीवी नाशक औषधियों की प्रयोग प्रक्रिया

१) खाल के नीचे लगने वाले इंजेक्शन का प्रयोग किया जा सकता है इसकी विशेषता ये है की यह बाह्य एवं अन्तः परजीवी दोनों से छुटकारा दिलाता है।

२) कुछ दवाइयां जिन्हे पानी में घोलकर पशु को नहलाया जाता है, का उपयोग किया जा सकता है। परन्तु यहाँ विशेष ध्यान देना चाहिए कि पशु को नहलाने के पहले उसका मुँह बांध दें ताकि वह अपनी गीले शरीर को न चाटे। मुँह को शरीर सूखने के बाद खोलना चाहिए

विशेष - पशुपालक इन दवाइयों का चयन स्वयं ना करें , इसके लिए पशु चिकित्सक से परामर्श जरूर लेवे।

5 बकरियों में प्रजनन प्रबंधन

बकरी पालन व्यवसाय में अधिक लाभ बकरियों की प्रजनन क्षमता पर निर्भर करता है इसलिए हमेशा ऐसी नस्ल का चुनाव करना चाहिए जिनमे जुड़वाँ या एक ही गर्भ में तीन बच्चे देने की प्रवृत्ति हो जैसे की जमुनापारी इत्यादि। बकरियां साल भर हर २१ दिनों में गर्मी में आती है लेकिन अनुकूल यह है की उन्हें साल में दो बार मतलब अप्रैल-मई एवं सितम्बर-अक्टूबर महीनों में ग्याभिन कराया जाये जिससे वो क्रमशः अक्टूबर-नवम्बर तथा फरवरी-मार्च महीनों में बच्चों को जन्म दें। ऐसा समय माँ के स्वास्थ्य, दुग्ध उत्पादन एवं बच्चे के शारीरिक वृद्धि के लिए उपयुक्त रहता हैं

प्रजनन के लिए उपयुक्त नस्ल का चुनाव भौगोलिक स्थिति एवं इस बात पर निर्भर करता है की बकरी पालन का मुख्य उद्देश्य केवल मांस के लिए है या फिर दूध और मांस दोनों के लिए है। इसलिए किसान को ऊपर तालिका में दी हुई नस्लों को चुनना चाहिए।

सारांश

आवश्यक प्रबंधन के अभाव में बकरियों की मृत्युदर लगभग ३० से ५० प्रतिशत तथा उनकी उत्पादकता आधी से लेकर दो तिहाई (५० तो ७५%) तक देखी गई है जो बहुत अधिक है जिससे बकरी पालन घाटे का सबब बन जाता है। हालाँकि वैज्ञानिक पद्धति से पोषण प्रबंधन, उन्नत नस्ल की बकरियों के चयन, उचित स्वस्थ्य प्रबन्धन तथा अच्छी विपणन तकनीकी अपनाने से बकरियो की उत्पादन क्षमता को डेढ़ से दो गुना तक बढ़ाया जा सकता है।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरणः- आलोक कुमार एवं सरोज कुमार रजक

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

निदेशक,प्रसार शिक्षा

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in

Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021